SHAHEED MAHENDRA KARMA UNIVERSITY
BASTAR, JAGDALPUR (C.G.)

SOS IN EDUCATION

Subject:- Teaching of Value

Topic :- नैतिक मूल्यों के लाभ, बाधाएँ और सुझाव

Mrs. Rani Mathew
Guest Lecturer
SOS In Education
S.M.K.V.V. Bastar, Jagdalpur

रूपरेखा:-

- प्रस्तावना
- नैतिक मूल्य का अर्थ
- नैतिक मूल्यों के लाभ
- नैतिक मूल्यों के मार्ग में आने वाली बाधाएं
- नैतिक मूल्यों के विकास हेतु सुझाव
- निष्कर्ष

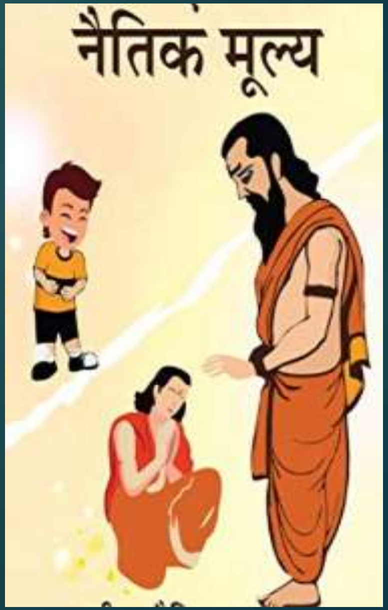

प्रस्तावना:-

trust
values
morals
right or wrong
behavior
choices
ETHICS
dilemma
respect
honesty
empathy
good or bad
society

नैतिक मूल्य का अर्थ :-

नैतिक शब्द नीति से बना है और नीति शब्द में ‘ **इक** ’ प्रत्यय लगाने पर नैतिक शब्द बनता है। नैतिक शब्द का अर्थ होता है- नीति से संबंधित। नैतिक मूल्य से तात्पर्य ऐसे मूल्यों से है जिसका संबंध नीति से होता है ।

अर्थात ‘ऐसा व्यवहार, जिसका अनुकरण करने से सब की रक्षा हो सके। नैतिक मूल्य से व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है इसलिए इसे चारित्रिक मूल्य भी कहा जाता है।’

जैसे – विनम्रता, सहनशीलता, सत्यनिष्ठा, अनुशासन, शिष्टाचार, परोपकार की भावना, आदि।

नैतिक मूल्यों के लाभ (Merit of moral value)

नैतिक मूल्य के निम्नलिखित लाभ है:-

- चारित्रिक गुणों का विकास होता है।
- समाज में शांति और व्यवस्था स्थापित होती हैं।
- आपसी विश्वास और प्रेम का वातावरण निर्मित होता है।
- प्रतियोगिता के स्थान पर सहयोग की भावना का उदय होता है।
- विघटन के स्थान पर राष्ट्रीय एकता में वृद्धि होती है ।

नैतिक मूल्यों के मार्ग पर आने वाली बाधाएं

नैतिक मूल्यों के शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाएं निम्न हैं:-

- **वैकल्पिक विषय के रूप में:-**

भौतिकतावादी प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति नैतिक मूल्यों को महत्वहीन मानने लगे हैं। नैतिक मूल्यों के स्थान पर अन्य मूल्यों को महत्व प्रदान किया जा रहा है। नैतिक मूल्य को वैकल्पिक मान कर तुलनात्मक रूप से कम महत्व प्रदान किया जाता है।

- **परिवार की भूमिका में कमी:-**

नैतिक मूल्यों के विकास में सर्वाधिक भूमिका परिवार एवं अभिभावकों की होती है लेकिन वर्तमान आधुनिकता के दौर में परिवार एवं अभिभावक अपनी जिम्मेदारी को निभा पाने में असमर्थ हैं ।

विद्यालय को जिम्मेदारी प्रदान करना :-

नैतिक मूल्यों की शिक्षा की जिम्मेदारी केवल विद्यालय की नहीं है। विद्यालय को सभी विषय के शिक्षण करने की जिम्मेदारी सौंप कर सभी मुक्त हो जाते हैं। नैतिक मूल्यों की जिम्मेदारी केवल विद्यालय की नहीं हो सकती।

नैतिक मूल्यों का धार्मिकीकरण :-

नैतिक मूल्यों की शिक्षा को धर्म के साथ जोड़कर देखा जाता है। नैतिक शिक्षा प्रदान करते समय जब किसी विशेष धर्म के किसी प्रसंग का उल्लेख किया जाता है तो अन्य धर्मों के लोग उसका विरोध करने लगते हैं। नैतिक शिक्षा को धर्म के चश्मे से देखा जाता है इसलिए नैतिक शिक्षा प्रभावी नहीं हो पाया रही है।

शिक्षक का अनैतिक आचरण:-

नैतिक मूल्य की शिक्षा में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, शिक्षक एक विद्यार्थी के लिए अतिआवश्यक है लेकिन शिक्षक के अनैतिक कार्य या व्यवहार के कारण विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास नहीं होता है।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु सुझाव

- **अनिवार्य विषय मानना:-**

नैतिक मूल्यों की शिक्षा को अनिवार्य विषय मानकर अध्ययन अध्यापन कराया जाना चाहिए। नैतिक शिक्षा को अन्य विषयों के समान महत्व प्रदान किया जाना चाहिए।

- **शिक्षक का आदर्श चरित्र:-**

नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक अपने आदर्श चरित्र के माध्यम से प्रभावी मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

- **मजुमदार 1983 के अनुसार :-**

मूल्यों को औपचारिक या अनौपचारिक रूप से पढ़ाया नहीं जा सकता। इन्हें तभी विकसित किया जा सकता है जब विद्यालय इनके विकास के लिये छात्रों को उचित अवसर प्रदान करे। विद्यार्थी विद्यालय के अंदर तथा बाहर अपने अनुभवों के आधार पर ईमानदारी, सहभागिता, आत्मनियंत्रण जैसे गुणों को सीखता और विकसित करता है।

- **योग्य शिक्षकों की नियुक्ति:-**

शासन के द्वारा योग्य शिक्षक की नियुक्ति की जानी चाहिए। शिक्षक की नियुक्ति करते समय शिक्षक के चरित्र एवं नैतिक गुणों को ध्यान में रखना चाहिए।

- **<u>दयानन्द सरस्वती के अनुसार:-</u>**

"कोरा ज्ञान व्यर्थ होता है जब तक इस सद्गुणों (सत्यता, कर्मशील, सदाचार और परोपकार आदि) का विकास नहीं होगा, तब तक इस ज्ञान से धर्म अर्थ, काम और मोक्ष किसी की भी प्राप्ति नहीं हो सकती । सद्गुणों से युक्त व्यक्ति ही अपना तथा समाज का कल्याण कर सकता है। शिक्षा के द्वारा सद्गुणों का विकास किया जाना चाहिए "।

- **<u>प्राथमिक स्तर से प्रारंभ:-</u>**

नैतिक मूल्यों की शिक्षा का प्रारंभ प्राथमिक स्तर से ही किया जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों को स्थायी किया जा सकता है।

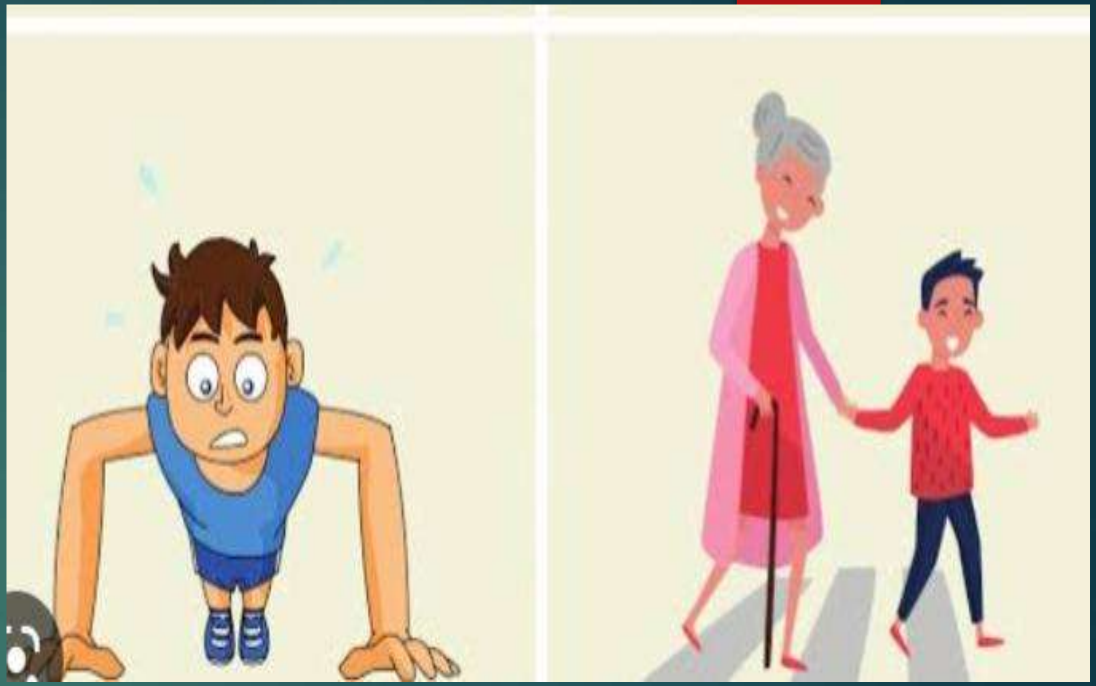

- **<u>प्लेटो के अनुसार</u>**:-

“ 3 वर्ष के बच्चों को दैवीय कहानियां और उनके माध्यम से बच्चों में सद्गुणों और नैतिकता की नींव रखने का कार्य किया जाना चाहिए। 13 वर्ष से 16 वर्ष तक के बच्चों को तो यह धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा विधिवत दिया जाना चाहिए ”।

- **<u>धार्मिक आधार पर शिक्षा प्रदान न करना:-</u>**

नैतिक मूल्यों की शिक्षा को धार्मिक आधार पर प्रदान नहीं किया जाना चाहिए,धार्मिक आधार पर नैतिक शिक्षा प्रदान करने पर अन्य धर्मों के लोगों को आपत्ति हो सकती है। यदि धार्मिक आधार पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना आवश्यक हो तो सभी धर्मों के प्रसंगों एवं अंशों को शामिल किया जाना चाहिए।

चरित्र निर्माण और मानव मूल्य

नैतिक मूल्य मानव में चरित्र निर्माण का कार्य करता है। चरित्र निर्माण की इस स्थिति के साथ करुणा, सहनशीलता साहस ,निर्णय क्षमता, सूझ बुझ, दूसरों के प्रति आदर , सामुहिक प्रवृत्ति,सत्य निष्ठा और कर्तब्य भावना आदि मूल्य गुणों का विकास भी जुड़ा हुआ है।

इन्हें शारीरिक शिक्षा, पाठयक्रम गतिविधियों और कार्य अनुभव से विशेष रूप से किया जाता है। शारीरिक शिक्षा, खेलकूद के साथ साथ समाज सेवा,स्काउडिंग गाइडिंग , NSS तथा अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

Thoughful
Courageous
Honest
Considerate
Sharing
Caring!
Lilly Silly Billy

निष्कर्ष:-

उपरोक्त विभिन्न विचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि नैतिक शिक्षा अनिवार्य रूप से विभिन्न माध्यमों से प्रदान की जानी चाहिए। नैतिक शिक्षा के माध्यम से परिवार, समाज एवं देश का विकास किया जा सकता है ।

जैसे कि एक विद्वान कन्फ्यूशियस कहते हैं कि " यदि आपका चरित्र अच्छा हैं तो आपके परिवार में शांति रहेगी, यदि आपके परिवार में शांति रहेगी तो समाज में शांति रहेगी और यदि समाज में शांति रहेगी तो राष्ट्र में शांति रहेगी "।

धन्यवाद